IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनजातीय विकास में सरकारी योजनाओं की भूमिका

शोध निर्देशक
डॉ चन्द्रशेखर जैमन
एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
शोधार्थी
सन्तोष कँवर,
अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सारः–

भारत जैसे विविध सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना वाले देश में अनुसूचित जनजातीया एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। भारत में अनुसूचित जनजातीयों की संख्या 8.9% है। ये जनजातीया एक विशिष्ट समुदाय का निर्माण करती है, जिनका योगदान न केवल प्रकृति संरक्षण में रहा है, बल्कि वे पारंपरिक ज्ञान, आदिवासी कला संस्कृति और मूल्यों के संवाहक भी रही है। बावजूद इसके यह समुदाय लंबे समय तक सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास से वंचित रहा है। ऐतिहासिक शोषण, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की कमी नीति निर्माण में भागीदारी का अभाव इन सभी कारणों ने जनजातीय समाज को बहुआयामी पिछड़ेपन की स्थिति में पहुँचा दिया है। जनजातीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा जनजातीयों के सम्पूर्ण विकास हेतु अनेक योजनाएँ चलाई जा रही है जो शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और कौशल विकास पर आधारित है। शोध का उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों में योजना के प्रभाव का अध्ययन करना है तथा यह देखना है कि जनजातीयों के विकास हेतु चलाई जाने वाली योजनाओं के संचालन में कौन–कौनसी बाधाएँ उत्पन्न होती हैं तथा इन बाधाओं को दूर करने हेतु कौन–कौनसे उपाय किये जा सकते हैं।

प्रत्येक योजना चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो, या फिर स्वास्थ्य के क्षेत्र में, ये तभी सफल होगी जब स्थानीय लोग इनकी आवश्यकता, उपयोगिता और प्रक्रिया से परिचित होंगे। अक्सर जनजातीय क्षेत्रों में देखा गया है कि योजनाएँ मौजूद तो होती हैं लेकिन क्रियान्वयन अधुरा, भ्रष्ट या अनजान रहता है। यही कारण है कि कई योजनाएँ अपेक्षाकृत अधिक सफल रही है, जैसे– प्रधानमंत्री आवास योजना, राशन वितरण प्रणाली। क्योंकि उनका ढाँचा अधिक स्पष्ट, सरल है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से हम उन योजनाओं का विश्लेषण करेंगे, जो वर्तमान में केंद्र और राजस्थान राज्य में क्रियान्वित हो रही हैं, और यह देखने का प्रयास करेंगे कि उनका वास्तविक प्रभाव कितना रहा? उनके लाभार्थी कौन–कौन हैं? साथ ही जमीनी स्तर पर हमें क्या परिवर्तन दिखाई देता है?, हम यह भी समझने का प्रयास करेंगे कि किन योजनाओं को बेहतर बनाया जा सकता है? किन क्षेत्रों में जागरूकता की

कमी है?, और कैसे प्रशासन और समुदाय के बीच सहभागीता से योजनाओं की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है?

मुख्य शब्द :– जनजाति, ऐतिहासिक शोषण, आर्थिक, बहुआयामी योजनाएँ आदि।

परिचय :– भारत अनेक सांस्कृतिक विविधताओं वाला देश है। यहाँ अनेक संस्कृति को मानने वाले लोग निवास करते हैं! उनमें से जनजातीय समुदाय भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनजातीयाँ अपनी परम्परागत संस्कृति व रीति–रिवाजों को हमेशा बनाये रखती है। यह प्राकृतिक संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन वर्तमान समय में ये आर्थिक शोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी व आर्थिक पिछड़ेपन का शिकार हो रही है।

राजस्थान राज्य, विशेषकर उसके दक्षिणी जिलों डूंगरपुर, बांसवाड़ा और उदयपुर में अनुसूचित जनजातीयों की बड़ी जनसंख्या निवास करती है। जिनकी सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता और भौगोलिक अलगाव राज्य सरकार के समक्ष एक बड़ी नीति निर्माण चुनौती प्रस्तुत करते हैं। राज्य सरकार ने इस चुनौती का सामना करते हुए कई लक्षित योजनाएँ बनाई है जो केन्द्र सरकार की पहल को राज्य स्तर पर लागू करने के साथ–साथ अपनी क्षेत्रीय जरूरतों के अनुरूप स्थानीय कार्यक्रमों का भी संचालन करती है। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजातीयों की सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका सांस्कृतिक संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित करना है।

उद्देश्य :–

1. आदिवासी जनजातीय क्षेत्रों में लागू की जा रही प्रमुख सरकारी योजनाओं का अवलोकन करना।
2. जनजातीय योजनाओं की जनजातियों तक पहुँच, क्रियान्वयन और परिणामों का मूल्यांकन करना।
3. योजनाओं के क्रियान्वयन के समय आने वाली प्रमुख बाधाओं की पहचान करना।

शोध क्षेत्र :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए राजस्थान के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों (डूंगरपुर, उदयपुर) को शोध हेतु चुना गया है।

अनसंधान पद्धति :– शोध हेतु प्राथमिक आँकड़े व द्वितीयक आँकड़े दोनों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन जनजातीय परिवारों से साक्षात्कार, फोकस ग्रुप डिस्कशन, स्थानीय अधिकारियों से बातचीत के द्वारा प्राप्त किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों का संकलन सरकारी रिर्पोट, दस्तावेज, सेंसस आदि के द्वारा प्राप्त किये गये हैं।

प्रस्तुत अध्ययन मिश्रित पद्धति पर आधारित है। इसमें जनजातीय क्षेत्रों की जनजातीय योजनाओं व उसके क्रियान्वयन तथा जनजातीय क्षेत्र पर उसके प्रभाव की जाँच मात्रात्मक व गुणात्मक तरीकों से की गई है। यह तकनीक न सिर्फ जनजातीय योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रति समझ विकसित करती है, बल्कि योजनाओं का प्रभाव जनजातीयों पर कितना रहा उसकी जाँच करती है।

प्रमुख योजनाएँ:–

केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ –

राज्य सरकार द्वारा संचालित जनजातीय योजनाओं को जानने से पूर्व केन्द्र स्तर पर संचालित योजनाओं को जानना अतिआवश्यक है। भारत सरकार का जनजातीय विकास मंत्रालय अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएँ संचालित करता है। इन योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय आबादी को मुख्यधारा से जोड़ना उसकी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित

रखना और उन्हें स्थायी आजीविका एवं स्तर प्रदान करना है। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित प्रमुख योजनाएँ निम्नलिखित है–

1. वन बंधु कल्याण योजना :– यह योजना 2014 में एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों में समग्र विकास सुनिश्चित करना है। यह योजना केवल शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दस प्रमुख क्षेत्रों जैसे– बुनियादी ढाँचा, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पेयजल, कौशल विकास, कृषि, वित्तीय समावेशन, सामाजिक सुरक्षा और संस्कृति संरक्षण को समेटती है। हालाँकि यह योजना विभिन्न राज्यों में समान रूप से प्रभावी नहीं ही। कई जिलों में यह योजना सिर्फ प्रशासनिक फाइलों में सिमट गई। तथा कुछ राज्यों में अत्यधिक सफल रही।
2. जनजातीय अनुसंधान संस्थान (TRI) :– इसका प्रमुख उद्देश्य अनुसूचित जनजातियों की परंपराओं, संस्कृति, बोली, सामाजिक व्यवस्था और आवश्यकताओं का गहन अध्ययन करता है ताकि योजनाओं को नवाचार और संवेदनशीलता के साथ लागू किया जा सके। वर्तमान में देशभर में 26 से अधिक TRI संस्थान कार्यरत हैं। जिनका प्रमुख उद्देश्य जनजातीय सर्वेक्षण करना जनजातियों से सम्बन्धित डेटा संकलन व विश्लेषण करना है।
3. एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) :– जनजातीय बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से EMRS की स्थापना की गई। उन विद्यालयों में छात्रावास, भोजन, गणवेश और पुस्तकों सहित शिक्षा मुफ्त दी जाती है। इसका प्रभाव यह रहा कि जहाँ विद्यालय स्थापित हुए। वहाँ बच्चों की शैक्षणिक प्रगति में सुधार देखा गया। साथ ही बालिका शिक्षा में भी वृद्धि हुई।
4. प्रधानमंत्री वन धन योजना :– यह योजना जनजातीय आबादी को लघु वन उपज आधारित आजीविका देने हेतु शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य वन उत्पाद संग्रहण करने वाले समुदाय को संगठित कर उन्हें प्रसंस्करण, ब्रांडिंग और विपणन से जोड़ा जाए।
5. पोषण अभियान और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम :– केन्द्र सरकार ने विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों में कुपोषण को कम करने हेतु पोषण अभियान चलाया है। जिसमें आंगनबाड़ी केन्द्रों की मदद से निरन्तर निगरानी, आयरन और कैल्शियम सप्लीमेंटेशन और बालिका पोषण शिक्षा दी जाती है। साथ ही डिजिटल भारत अभियान के तहत जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता, मोबाईल एप प्रशिक्षण और डिजिटल भूगतान पर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं।

भारत सरकार ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जनजातीय समुदायों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को सशक्त बनाना है। सरकार द्वारा लागू की गई योजनाएँ जनजातीय लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए डिजाइन की गई है। इन योजनाओं का प्रभाव केवल जनजातीय समुदायों तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि यह समग्र भारतीय सामाजिक विकास में भी अहम् भूमिका निभाती है।

राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ –

राज्य सरकार द्वारा जनजातीय विकास हेतु समय–समय पर अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं। जो इस प्रकार है–

1. जनजातीय उपयोजना (TSP) :– राजस्थान सरकार की जनजातीय विकास रणनीति का आधार जनजातीय उप योजना है। जो राज्य बजट का वह हिस्सा होती है जो केवल अनुसूचित जनजातियों की भलाई और विकास पर खर्च किया जाता है। यह योजना 20% से अधिक जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों में लागू होती है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य न केवल सामाजिक कल्याण योजनाओं तक सीमित है, बल्कि यह कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, शहरी सुविधा और रोजगार के क्षेत्रों में भी योजनाओं का समावेश करती है। यह विभागीय बजट के अन्दर ही जनजातीय आबादी के अनुपात के अनुसार धन का प्रावधान करती है जिससे समन्वित विकास को बढ़ावा मिलता है।

प्रभाव :– TSP के तहत जनजातीय समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, आवास और रोजगार जैसी सुविधाएँ प्रदान की जाती है। जिससे उनमें जीवन स्तर को सुधारने में मदद मिलती है। यह जनजातीयों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती हैं। जिससे सामाजिक स्थिति में सुधार होता है और समाज में समान अवसर मिलते हैं।

2. शिक्षा से सम्बन्धित योजना :– राज्य में शारदा बालिका छात्रवृत्ति योजना, आदिवासी बालिका छात्रावास योजना चलाई जा रही है। शारदा बालिका छात्रवृत्ति योजना के तहत् कक्षा 6 –12 की जनजातीय छात्राओं को प्रतिवर्ष 3000–5000 रूपये की छात्रवृत्ति दी जाती है। जिससे बालिकाओं को स्कूल छोड़ने से रोका जा सके। साथ ही आदिवासी बालिका छात्रावास योजना के तहत् बालिकाओं को आवासीय सुविधा प्रदान की जाती है। जिसमें भोजन, किताबें व शिक्षक सहायता शामिल है।

प्रभाव :– इन योजनाओं के माध्यम से जनजातीय छात्रों को शिक्षा के बुनियादी अवसर प्राप्त हुए हैं। विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति भी बढ़ी है। विद्यालयों की उपलब्धता भी बढ़ी है।

3. स्वास्थ्य से सम्बन्धित योजना :– जनजातीय क्षेत्रों में जननी शिशु सुरक्षा योजना, मातृ वंदना योजना, आंगनबाड़ी एवं आशा कार्यकर्ताओं के नेटवर्क के माध्यम से पोषण, मातृ–शिशु स्वास्थ्य और प्राथमिक चिकित्सा को सशक्त करना शामिल है। जननी सुरक्षा योजना के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं को संस्थागत प्रसव हेतु प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती हे। जिससे प्रसव सम्बन्धित मृत्युदर में कमी लाने का प्रयास किया जाता है। राज्य में 104 व 108 एंबुलेंस सेवाएँ भी उपलब्ध कराई जाती है। ताकि माताओं को दूरस्थ क्षेत्रों से अस्पताल लाया जा सके , लेकिन अभी अनेक गाँवों में स्वास्थ्य उपकेन्द्रों की दूरी, डॉक्टरों की अनुपलब्धता, दवाओं की अनियमित आपूर्ति और महिला स्वास्थ्य कर्मियों की कमी जैसे– मुद्दे मौजूद हैं। जिससे योजनाओं का समुचित लाभ नहीं मिल पाता।

4. जनजातीय आजीविका योजनाएँ और स्वरोजगार प्रोत्साहन :– राजस्थान सरकार ने जनजातीय समुदायों के लिए स्वरोजगार प्रोत्साहन योजनाएँ जैसे जनजातीय स्वरोजगार योजना, राजीव गाँधी ग्रामीण आजीविका मिशन और वनोपज विपणन समर्थन योजना शुरू की है। राजीव गाँधी ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर उन्हें प्रशिक्षण, बीज पूंजी और विपणन सहायता दी जाती है। इन समूहों द्वारा हस्तशिल्प, डेयरी, खाद्य प्रसंस्करण और पशुपालन से जुड़ी गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। डूंगरपुर व बांसवाड़ा में ये समूह आत्म–निर्भरता की दिशा में सार्थक प्रयास कर रहे हैं। उन उपज योजनाओं के तहत् तेंदूपत्ता, महुआ, शहद आदि की खरीद समर्थन मूल्य पर की जाती है। जिससे

जनजातियों को मुनाफा मिल सके। हालांकि बाजार संपर्क की कमी, विपणन दक्षता की अनुपस्थिति और मूल्य निर्धारण की अपारदर्शिता इन प्रयासों में बाधा उत्पन्न कर रही है।

5. जनजातियों के लिए विशेष रोजगार सृजन योजनाएँ :— सरकार ने जनजातियों के लिए रोजगार सृजन योजनाएँ लागू की है, इनमें सबसे प्रमुख है प्रधानमंत्री रोजगार योजना, स्टैंड—अप—इंडिया योजना। इन योजनाओं के माध्यम से व्यापार और उद्योग की शुरूआत के लिए ऋण, सरकारी सहायता और कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। सरकार द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से कारीगरी, सिलाई, बुनाई और अन्य श्रमिक कौशलों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जिससे जनजातियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सके। ताकि उनसे आय स्रोत् बढ़ सकें।

6. जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन और आर्थिक गतिविधियाँ :— राज्य सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन के माध्यम से रोजगार और आय के अवसर प्रदान करने हेतु तथा जनजातीय क्षेत्रों को पर्यटन के लिए आकर्षक बनाने के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं इन योजनाओं के तहत् जनजातीय इलाकों में प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहरों को पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित किया जा रहा है जिससे इन इलाकों में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। इन योजनाओं के माध्यम से जनजातीय समुदाय अपनी पारंपरिक कला और शिल्पकला का प्रदर्शन करते हैं और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा कृषि और हस्तशिल्प उत्पादों को बाजार में ले जाने के लिए जनजातीय समुदायों को प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इन योजनाओं के माध्यम से जनजातीय समुदायों को न केवल वित्तीय सहायता मिलती है, बल्कि उन्हें उनके पारंपरिक पेशों के साथ—साथ नए व्यवसायों की शुरूआत करने के अवसर भी मिलते हैं। जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है, और वे समाज में अपनी स्थिति को मजबूत करने में सक्षम होते हैं।

7. उच्च शिक्षा और अनुसंधान :— राजीव गाँधी जनजातीय विश्वविद्यालय की भूमिका

जनजातीय क्षेत्रों डूंगरपुर, बांसवाड़ा में स्थापित राजीव गाँधी जनजातीय विश्वविद्यालय जिसे वर्तमान में गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। यह राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में स्थित है। इसे 2012 में स्थापित किया गया था तथा इसका नाम बदलकर 2016 में गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय कर दिया गया। यह विश्वविद्यालय बांसवाड़ा, डूंगरपुर में स्थापित सभी कॉलेजों पर अधिकार क्षेत्र रखता है। यह विश्वविद्यालय न केवल उच्च शिक्षा का केन्द्र है बल्कि जनजातीय समुदाय के सांस्कृतिक अध्ययन, साहित्यिक विकास और प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी में भी सहायक है। यहाँ पर जनजातीय इतिहास, लोक कला, समाजशास्त्र व जनजातीय नीति जैसे विषयों पर केन्द्रित पाठ्यक्रम चलाए जाते है। यह विश्वविद्यालय जनजातीय छात्रों को जीवन में सहभागिता, शोधकार्य और प्रतिस्पर्धा सोच के मंच प्रदान करता है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना जनजातीय समुदायों की शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य जनजातीय विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करना और उन्हें समाज में मुख्यधारा से जोड़ना है।

इस विश्वविद्यालय की भूमिका इन समुदायों के लिए एक सशक्तीकरण के रूप में कार्य करती हैं। जो लंबे समय से सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिये पर थे। यहाँ पर छात्रों को उनके पारम्परिक ज्ञान के साथ—साथ आधुनिक शिक्षा का समावेश किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप ये छात्र न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करते है। बल्कि अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

8. प्रशासनिक ढ़ाँचा और ज।क की भूमिका :– राजस्थान सरकार ने जनजातीय क्षेत्रों में योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन हेतु Tribal Area Development (TAD) प्राधिकरण की स्थापना की है। जो योजनाओं के अनुमोदन, निगरानी और संसाधन आंवटन का कार्य करता है। इसके अंतर्गत जनजातीय सलाहकार परिषद्, पंचायत राज प्रतिनिधित्व और ग्राम विकास समितियां कार्य करती हैं। इन संस्थाओं का कार्य–योजना निर्माण में जनजातीय भागीदारी को सुनिश्चित करना है हालाँकि, अक्सर यह देखा गया है कि निर्णय निर्माण प्रक्रिया में नौकरशाही हावी रहती है, जिससे समुदाय की आवाज योजनाओं में शामिल नहीं हो पाती है। आवश्यकता है कि इन संस्थाओं को अधिक पारदर्शी, विकेन्द्रीकृत और उत्तरदायी बनाया जाए।

योजनाओं की तुलना, प्रभाव एवं विश्लेषण :–

शोध मे 200 उत्तरदाताओं द्वारा जनजातीय योजनाओं से सम्बन्धित कुछ प्रश्न पूछे गये तथा उनसे उनका स्तर ज्ञात किया गया। जो इस प्रकार है।

सारणी–1 क्या आप राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही किसी जनजातीय योजना के लाभार्थी हैं?

विकल्प	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
हाँ	132	66
नहीं	68	34

विश्लेषण : लगभग दो तिहाई उत्तरदाताओं ने बताया कि वे किसी न किसी योजनाओं से लाभान्वित हुए हैं।

सारणी–2 आपने निम्न में से किस योजना का लाभ लिया है?

योजना का नाम	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
शारदा बालिका छात्रवृत्ति योजना	56	28
जननी सुरक्षा योजना	78	39
स्वरोजगार योजना	44	22
वन उपज समर्थन योजना	36	18
छात्रावास सुविधा	24	12

विश्लेषण : सारणी 2 से स्पष्ट है कि जननी सुरक्षा योजना अधिक उपयोग में आई, जबकि शिक्षा व आर्थिक योजनाओं की पहुँच अपेक्षाकृत कम रही।

सारणी–3 आपको योजना की जानकारी कहाँ से मिली?

सूचना स्रोत्	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
पंचायत/ग्रामसभा	72	36
आशा/आंगनबाड़ी कार्यकर्ता	54	27
स्कूल/शिक्षक	32	16
मीडिया/टीवी/रेडियो	18	9
अन्य	24	12

विश्लेषण : सारणी 3 से स्पष्ट है कि पंचायत और आशा कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनजातीय लोगों को अधिक जनकारी प्राप्त हुई है। जिससे उसकी भूमिका स्पष्ट होती है।

सारणी–4 क्या सरकारी योजनाओं के तहत् मिलने वाली सेवाएँ संतोषजनक हैं?

विकल्प	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
पूरी तरह संतोषजनक	34	17
आंशिक रूप से	98	49
असंतोषजनक	68	34

विश्लेषण : सारणी 4 लगभग आधे लोगों को सेवाओं की गुणवत्ता या पहुँच में कमी महसूस होती है।

सारणी–5 आपकी राय में राज्य की कौनसी योजना सबसे प्रभावी रही?

योजना का नाम	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत
जननी सुरक्षा योजना	64	32
छात्रवृत्ति/छात्रावास योजना	48	24
आजीविका एवं स्वरोजगार योजना	46	23
वन उपज विपणन योजना	22	11
कोई भी नहीं	20	10

विश्लेषण : सारणी 5 मातृ–शिशु स्वास्थ्य योजना अर्थात् जननी सुरक्षा योजना सबसे अधिक प्रभावी मानी गई, जबकि आजीविका योजनाओं को भी पर्याप्त प्रतिक्रिया मिली।

भारत में जनजातीय समुदायों के लिए चलाई जा रही योजनाओं का मूल्यांकन तब तक अधुरा है जब तक उनकी आपसी तुलना, व्यावहारिक प्रभाव और लाभार्थियों के अनुभव को समग्र रूप से न परखा जाए।

केन्द्र और राज्य सरकार दोनों ही स्तरों पर अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही है। जिनका उद्देश्य जनजातीय आबादी को समान अवसर, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करना है, परन्तु योजनाओं के उद्देश्य एक जैसे होते हुए भी उनके कार्यान्वयन की प्रक्रिया, पहुँच और प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिलता है।

जब हम योजनाओं के प्रभाव की बात करते हैं तो स्पष्ट होता है कि राज्य योजनाओं की स्थानीय समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक बसावट, भाषाई विविधता और भौगोलिक स्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया होता है। राज्य योजनाएं जमीन से अधिक जुड़ी होती है। हालाँकि, राज्य योजनाओं की जमीनी पहुँच अच्छी होती है। लेकिन उनकी वित्तीय क्षमता और तकनीकी विस्तार सीमित होता है।

राज्य योजनाएं अक्सर धन की कमी या पारदर्शिता की कमी से जूझती है। इसी प्रकार वन उपज मूल्य समर्थन योजना केन्द्र से प्राप्त फंडिंग के तहत् तो प्रभावी है, लेकिन बाजार मूल्य निर्धारण और भंडारण और विक्रय की संरचना अब भी राज्य स्तर पर कमजोर है।

योजनाओं के क्रियान्वयन से सम्बन्धित चुनौतियाँ

1. परिवहन सुविधाओं की कमी।
2. सड़कों की खराब स्थिति।
3. शिक्षा की कमी।
4. स्वास्थ्य केन्द्रों व विद्यालयों का दूर–दराज क्षेत्रों में स्थापित होना।
5. शिक्षकों की कमी, स्वास्थय कर्मचारियों की संख्या में कमी।
6. जनजातीयों में तकनीकी ज्ञान की कमी।

निष्कर्ष :– अंततः यह कहा जा सकता है कि केन्द्र और राज्य दोनों स्तरों की योजनाओं की अपनी–अपनी उपयोगिता है। जहाँ केन्द्र सरकार की योजनाएँ नीति, दिशा और वित्तीय संसाधनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, वहीं राज्य सरकार की योजनाएँ स्थानीय आवश्यकताओं, भाषा–संस्कृति की समझ और सीधे सम्पर्क के कारण अधिक प्रभावी साबित होती है। जनजातीय विकास की दिशा में वास्तविक परिवर्तन तभी संभव होगा, जब दोनों स्तरों की सरकारें परस्पर सहयोग करते हुए योजनाओं को समन्वित दृष्टिकोण से लागू करें। जिससे प्रभावशीलता, पारदर्शिता और सहभागिता सुनिश्चित हो सके। केवल बजट और कागजी प्रगति नहीं, बल्कि योजनाओं के व्यावहारिक प्रभाव, लाभार्थी संतुष्टि और दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता ही किसी योजना की सफलता का मापदंड होनी चाहिए।

सन्दर्भ :–

1. सिंह, आर (2018) वन धन योजना के माध्यम से जनजातीय आर्थिक विकास। जनजातीय आर्थिक विकास समीक्षा 2(1). पृ.सं. 33–45।
2. दास, ए. और जोशी, एन. (2016) राजस्थान विकास समीक्षा। 8(3). पृ.सं. 102–115।
3. गुप्ता, आर. (2017) जनजातीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कौशल विकास योजनाओं की भूमिका। महिला और विकास पत्रिका, 12(4). पृ.सं. 134–146।
4. दत्ता, एस. और रॉय, एस. (2017) भारत में जनजातीय विकास में सामाजिक–आर्थिक अवरोधों का विश्लेषण। भारतीय आर्थिक समीक्षा 4(5). पृ.सं. 56–69।
5. शर्मा, पी. और जोशी, पी. (2020) जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक और शैक्षिक सुधार। जनजातीय संस्कृति और शिक्षा प्रक्रिया 22(5). पृ.सं. 145–158।
6. रॉय, पी. (2019) राजस्थान में जनजातीय शिक्षा नीतियाँ: एक लम्बी अवधि का अध्ययन। भारतीय शिक्षा पत्रिका।
7. शर्मा, आर. (2017) भारत में जनजातीय स्वास्थ्य पहलों का प्रभाव। स्वास्थ्य नीति समीक्षा, 16 (2). पृ.सं. 45–58।